

औषधीय कीट भंवरी और वनौषधियों की सहायता से होती है मृगी (अपस्मार) की चिकित्सा

* 55 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान

* 90 से अधिक प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों एवं कीटों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सक 90 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग मृगी (अपस्मार) की चिकित्सा में करते हैं। इनमें से अधिकतर वनौषधियाँ सुगंध युक्त हैं। इसके अलावा कई तरह के औषधीय कीटों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक तौर पर होता है। सर्वेक्षणों के माध्यम से अब तक 55 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि पानी में चक्कर खाने वाले विशेष कीट भंवरे (वाटर स्ट्राइडर) का प्रयोग मृगी की चिकित्सा में होता है। इस कीड़े को गुड़ के साथ मिलाकर गोलियों के रूप में रोगियों को दिया जाता है। राज्य के बागबहारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच यह उपयोग लोकप्रिय है। वनौषधियों में बच का प्रयोग सामान्यतौर पर होता है। मृगी की चिकित्सा में बच का प्रयोग प्राचीन चिकित्सकीय ग्रंथों में भी वर्णित है पर राज्य के पारंपरिक चिकित्सक बच की दुर्लभ जाति एकोरस ग्रेमिनियस का प्रयोग करते हैं। इसका पौधा बच (एकोरस केलामस) के पौधे की तरह ही होता है पर पत्तियों में मध्य शिरा का अभाव होता है। इस दुर्लभ जाति की बच बहुत कम स्थानों में मिलती है। इसका आंतरिक और बाहरी दोनों ही तरीकों से प्रयोग होता है। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच निर्गुण्डी नामक वनौषधि का प्रयोग लोकप्रिय है। निर्गुण्डी की लकड़ी से बने छोटे जूते मृगी के रोगियों को लंबे समय तक पहनने की सलाह दी जाती है। इन जूतों का उपयोग मुख्य उपचार के साथ सहायक उपचार के रूप में किया जाता है। राज्य के दक्षिणी भागों के पारंपरिक चिकित्सक महुआ के पौधे का प्रयोग करते हैं। महुआ के पौधे का प्रयोग अन्य वनौषधियों के साथ मृगी के दौरे के समय किया जाता है। राज्य के बहुत से भागों में विभिन्न खरपतवारों की जड़ों से बने ताबीज और माला धारण करने का प्रचलन है। पारंपरिक चिकित्सकों का मानना है कि शरीर के संपर्क में रहने पर ये पौधे रोगियों को विशेष राहत पहुंचाते हैं। इन ताबीजों और माला को तैयार करने में प्रयोग होने वाले विभिन्न रंगों के धागे भी चिकित्सा में अहम भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक चिकित्सक मृगी के उपचार के लिये रोगियों के लिये विशेष दिनचर्या बनाते हैं और रोगियों को इसके पालन की सक्त हिदायतें दी जाती हैं। इस दिनचर्या में रोगियों को दिन के कुछ घंटे विशेष वृक्षों की छांव में बिताने होते हैं। इसके अलावा विभिन्न वनौषधियों के पास से एकत्र की गई मिट्टी का प्रयोग भी लेप के रूप में किया जाता है। सतावर, काली मूसली, काली हल्दी, पुटकंद आदि वनौषधियों की सहायता से तैयार किये गये 80 से अधिक औषधीय तेल भी प्रचलन में हैं।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि मृगी की समस्या पूरे विश्व में है और अभी तक इसकी सफल चिकित्सा की आदर्श दवा का विकास नहीं हो पाया है। इन परिस्थितियों में छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान आधुनिक शोधकर्ताओं के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस दिशा में किया गया अविलंब प्रयास लाखों रोगियों को राहत पहुंचा सकता है।